मन्दित या मतिमन्द बच्चों के शैक्षिक प्रावधानों का वर्णन —

मानासिक मन्दित बालकों की शिक्षा अध्यापकों एवं अभिभावकों के समक्ष अत्यन्त चुनौतीपूर्ण समस्या के रूप में उपास्थित होती है। इन बालकों की विशिष्ट आवश्यकताओं पर तरह ध्यान देन पर पहले के कारण इस पूरी व्यवस्था को 'विशिष्ट शिक्षा' के नाम से अभिहित किया जाता है। विशिष्ट शिक्षा का प्रावधान करने के लिए अपेक्षित साज - सज्जा, सामग्री एवं साधनों को जुटाने हेतु पर्याप्त धनराशि की व्यवस्था करना समाज का उत्तरदायित्व है। मान्दित बालकों की शिक्षा का निर्देशन 'वैयक्तिकता' के सिद्धान्त पर निर्भर है।

आलिवर पी. कोलेस्टो ने मानसिक मन्दित बालकों के लिए अधिगम कार्य गठित करने हेतु कुछ विशेष सिद्धान्तों का उल्लेख किया है —

① अधिगम कार्य जटिल नहीं होना चाहिए। नवीन अधिगम कार्यों में कम - से कम तत्वों का समावेश होना आवश्यक है और इनमें से अधिकांश तत्व परिचित होने चाहिए।

② अधिगम कार्य छोटा होना चाहिए जिससे बालक उनकी उपेक्षा न कर सके।

③ अधिगम कार्य में निहित सोपानो को क्रमिक रूप से प्रस्तुत करना आवश्यक है। साथ ही, इन सोपानो का आकार अपेक्षाकृत छोटा होना चाहिए जिससे बालक त्रुटि न कर सकें।

④ अधिगम प्रक्रिया के अन्तर्गत बालक को प्रत्येक प्रयास पर सफलता का अनुभव कराना सर्वथा अपेक्षित है; जिससे उसकी रुचि एवं अभिप्रेरणा बनी रहें।

⑤ मन्दित बालकों के लिए अभिकल्पित अनेक शैक्षिक कार्यक्रमों में अभिक्रमित अधिगम पर आधारित अध्ययन सामग्रियो के अनुप्रयोग करने की संस्तुति की जाती है।

मानसिक मन्दित बालको हेतु अध्यापक की भूमिका —

मानसिक मन्दबुद्धि बालकों की शिक्षा के क्षेत्र मे सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि उनके लिए विशिष्ट विद्यालय हो तथा शिक्षक प्रशिक्षित हों। इसके अतिरिक्त भी शिक्षकों की कुछ विशेषताएँ होनी चाहिए कि वे मन्दित बालकों को सहज व उपयोगी शिक्षा दे सके। इसके लिए अध्यापक का विशेष प्रशिक्षित व व्यावहारिक होना आवश्यक है —

① अध्यापक को बालकों का सम्मान करना चाहिए।

② शिक्षकों को बालकों की सहायता, परामर्श और निर्देशन देने के लिए तैयार रहना चाहिए।

शिक्षको को बालको का एक या दो हस्तशिल्पो का प्रशिक्षण देने में कुशल होना चाहिए।

④ शिक्षक में बालकों के प्रति प्रेम, सहानुभूति और सहनशीलता का व्यवहार करने का गुण होना चाहिए।

मानसिक मन्दित बालको हेतु शैक्षिक प्रावधान —

जब बालक न पढ़ने के योग्य देखा जाता है अर्थात् वह सामान्य स्कूल पाठ्यक्रम से किसी भी प्रकार से लाभान्वित नहीं होता तो उसे स्कूल से निकाल दिया जाता है। इसका कारण होता है - उनकी बहुत कम मानसिक योग्यता। इन मानसिक अक्षम बालकों के सामाजिक समायोजन को टूटे घर, अनुचित वातावरण प्रभावित करता है।

मानसिक रूप से मन्दित बालको के लिए शैक्षिक व्यवस्था स्पष्ट, प्रबन्धित तथा भली प्रकार निर्देशित होना चाहिए। जहाँ पर पढ़ाई का प्रत्येक समान उपलब्ध होना चाहिए। अच्छी कक्षाओं का प्रबन्ध होना चाहिए। विशेष कक्षा के लिए जिले में योजना इस प्रकार होना चाहिए।